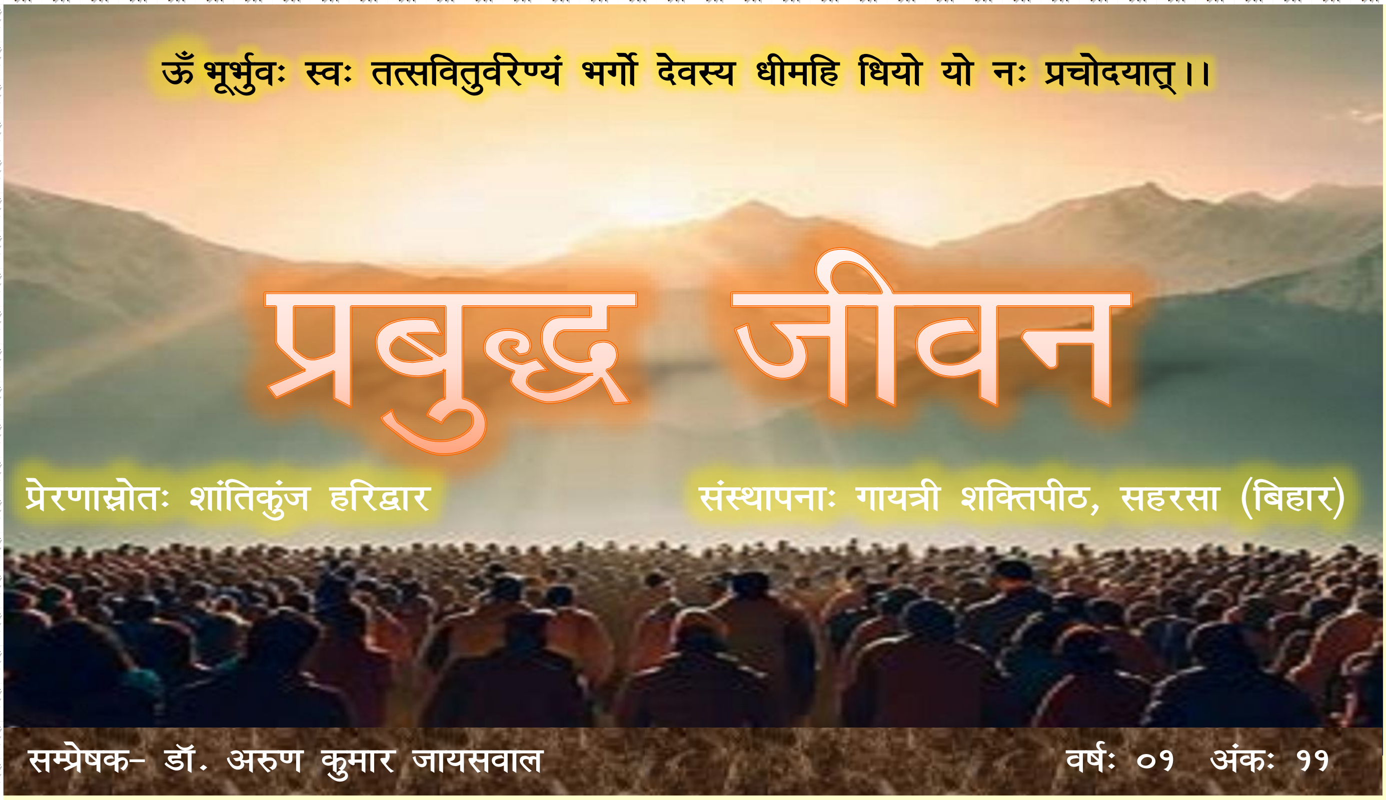

‘धीमहि’

‘धीमहि’ शब्द में गायत्री साधना की कला, विद्या एवं विज्ञान तीनों समाहित हैं। जिस तरह से गायत्री त्रिपदा है, ठीक उसी तरह से इस महिमामय शब्द ‘धीमहि’ के अर्थ व भाव भी त्रिआयामी हैं। इसे जानने वाला, समझने वाला साधक स्वतः ही गायत्री के सत्य को, सत्व को एवं सार को आत्मसात कर लेता है। इस शब्द के अर्थ की गहनता में जाने के लिए यह समझना आवश्यक है कि गायत्री महामंत्र की चेतना सविता देव हैं। जबकि सविता देव की चेतना व चैतन्यता का सार उनका भर्ग है। इस भर्ग में ही उनकी दिव्यता व देवत्व निहित है।

इस सत्य की अनुभूति करना कला है। इसके पश्चात् इसे धारण करना गायत्री की परम विद्या है। जबकि धारण करने के पश्चात् इसे अपने एवं औरों के जीवन में प्रयोग करना विज्ञान है। गायत्री साधना करने वाले कम ही लोग इन तीनों विद्याओं में पारंगत, विशेषज्ञ एवं सिद्ध हो पाते हैं। धीमहि की कला में कुशलता प्राप्त करने के लिए अपने आत्मतत्व एवं गायत्री की चेतना जो सूर्यरूप में है, उसकी एकात्मता के सौन्दर्य को अनुभव करना पड़ता है।

ऐसा करने के बाद हृदय क्षेत्र की एक सौ एक नाड़ियों में से उस एक नाड़ी को पहचानना पड़ता है, जिससे गायत्री के देव सविता के भर्ग को स्वयं में धारण किया जा सकता है। यही गायत्री विद्या है। इसके विज्ञान के रूप में धारण किए गए भर्ग का स्वयं के लिए एवं औरों के जीवन में अमोघ प्रयोग के वैज्ञानिक सूत्र समझने होते हैं। इन सूत्रों की व्यापकता समझ लेने पर फिर गायत्री साधना के ब्रह्माण्डव्यापी प्रयोग भी सम्भव बन पड़ते हैं। गायत्री के कला, विद्या एवं विज्ञान के त्रिआयामी रहस्य को धारण करना, इस पावन शब्द का रहस्य है।

हृदय से हृदय तक

काल के इस महत्वपूर्ण प्रवाह में हृदय ने देश के भावी नवनिर्माण की तैयार हो रही नींव में अपना भी पत्थर लगाने की गौरवानुभूति का अवसर पाया है और इस अनुभूति को आप सभी से साझा करने के लिए अक्षरों और शब्दों को अपना माध्यम बना लिया है। यह हम सभी का अनुभव है कि किसी भी देश के निर्माण में उसके जननायकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है लेकिन सत्य का वास्तविक स्वरूप तो यही कहता है कि इन जननायकों का आविर्भाव जनता के मध्य जनता के द्वारा ही होता है और प्रजातंत्र में तो यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

प्रजातंत्र को दुनिया में प्रचलित सभी तरह के वर्तमान शासन तंत्रों में से सर्वश्रेष्ठ प्रजातंत्र को माना जाता है। इसमें प्रजा को अपनी मर्जी की सरकार बनाने, अपनी सुविधा की व्यवस्था करने तथा अपनी रुचि का भविष्य निर्माण करने की सुविधा प्राप्त होती है। जनसामान्य को अपनी अभिव्यक्तियाँ और अभिव्यंजनाऐं प्रकट करने का अवसर मिलता है और वह लेखनी-वाणी से लेकर भाषा एवं धर्म-कला आदि को अपनी मान्यता के अनुसार व्यवहृत कर पाता है। यह सुविधा प्रजातंत्र में ही है कि वर्तमान से लेकर भविष्य तक के निर्माण को प्रजा अपनी अभिरुचि और क्षमता के अनुरूप विनिर्मित कर सकने में समर्थ हो सकती है।

जहाँ इतनी सुविधाएँ और अधिकार प्रजा को प्रदत्त हैं तो वहीं कर्त्तव्य की जिम्मेदारी भी कम नहीं है। यदि प्रजाजन अपने मत का मूल्य और मतदान की जिम्मेदारी ठीक तरह न समझें तो इस बात का खतरा पूरी तरह बना रहेगा कि अवांछनीय व्यक्ति उन्हें बहका कर उनकी जेब काट लें और निर्माण का जो महान अधिकार उनके हाथ में था, उन्हें नगण्य से प्रलोभन, हेय से भावावेश तथा बाजीगर जैसे बहकावे में उलझा कर मत पत्र को झपट ले जाएं। ऐसी दशा में धूर्त व्यक्ति ही चुने जा सकेंगे और मतदाता अपनी मूर्खतापूर्ण व्यहार के कारण सदा अपनी दुर्दशा का रोना रोता रहेगा। उसके लिए उत्तम शासन व्यवस्था एवं सुविधाजनक समाज की उपलब्धि आकाश कुसुम की तरह, मात्र कल्पना की वस्तु बनी रहेगी।

वस्तुतः शासन में जिस मूल स्रोत से विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं यदि उसे गहराई तक न समझा गया और परिवर्तन के केन्द्र बिन्दु की ओर ध्यान न दिया गया तो स्वच्छ और श्रेष्ठ शासन न मिल सकेगा और उसके बिना अति महत्त्व की समस्याओं के समाधान तथा अवरोधों का निराकरण संभव न हो सकेगा। प्रजातंत्र का मूल जनमत ही है। शासन का स्वरूप यहीं से निर्धारित होता है। आधार जैसा होगा, स्वरूप वैसा ही बनेगा। चिकनी मिट्टी और बालूरेत के बने खिलौनों में अन्तर होगा ही। बाजरे और गेहूं की रोटी का स्वाद एक जैसा नहीं हो सकता। कपास और रेशम के बने वस्त्रों के अन्तर प्रत्यक्ष दीखते रहेंगे। वोटर जिस स्तर के होंगे, प्रतिनिधि उसी स्तर के चुने जायेंगे और फिर निर्वाचितों की मनोवृत्ति तथा चरित्रनिष्ठा पर शासन का स्वरूप निर्धारित होगा और उस स्वरूप के आधार पर वे परिस्थितियाँ बनेंगी जो जनसाधारण को प्रभावित करती हैं। सुधारों का मूल केन्द्र यही है और बिगाड़ भी यहीं से आरम्भ होता है।

दूध से ही तो उभर कर मलाई ऊपर आती है। जैसा दूध होगा वैसी ही मलाई होगी। जैसी फूल की गंध होगी उसी के अनुरूप तो इत्र बनेगा। जनता की मनःस्थिति की तुलना दूध और फूल से करनी चाहिए और चुने हुए प्रतिनिधियों को मलाई या इत्र कहना चाहिए। इत्र को गाली देना बेकार है। आपको जैसी सुगंध पसंद है उसी तरह के फूल इकट्ठे करना पड़ेगा और फिर इत्र पसंद का मिल जायेगा। वोटर का दृष्टिकोण यदि ऊँचा है तो कोई कारण नहीं कि किसी सरकार में उत्कृष्ट व्यक्ति न भरे हुए हों और जब आदर्शवादी तंत्र शासन चला रहा होगा तो कोई कारण नहीं कि सरकारी मशीन का सुधार या पुनःनिर्माण न हो सके। यदि सरकारी कर्मचारी सही रीति से काम करते हैं तो कोई कारण नहीं कि आगामी वर्षों में देश प्रगति के उच्च सोपानों पर आरूढ़ ना हो।

अतः यह हम सभी विवेकशील व्यक्तियों का न केवल दायित्व है बल्कि हमें इसके लिए तत्पर भी हो जाना चाहिए कि हमारी जहाँ तक पहुँच और प्रभाव हो, अपने आसपास देश के हर नागरिक के मन में यह महत्त्व और गौरव जगायें कि वस्तुतः वह अपने देश-राष्ट्र का भाग्यनिर्माणकर्त्ता है। उसके हाथ में मतदान का ऐसा अस्त्र है जिसके सदुपयोग और दुरुपयोग पर ही देश की प्रगति एवं अवनति की आधारशिला रखी जा रही है और इसका उन्हें प्रबुद्ध मन से उपयोग करना चाहिए। इस माह परशुराम जयंती है जिन्होंने उस काल में मानस प्रशिक्षण करके निकृष्ट विचारों का मूलोच्छेदन किया था। उनके शुभाशीष से देश के हर मन-मस्तिष्क का कायाकल्प हो और शासन का नवीन उत्कृष्ट स्वरूप फिर से प्रकट हो, यही उनसे प्रार्थना है।

अरुण कुमार जायसवाल

MONEY

Money is a huge determinant of things in the human world. It quantifies success largely but what it really does is give a person a lot of confidence to move around. People who are financially very affluent are counted as real success. But the twist to the story is that how truly happy these people despite owning pots and pots of money. They say ultimately it is all about money. But it isn't. It is about how well you sleep in the nights, how much contentment and peace of mind you possess within you and how grateful you are to everything that you are blessed with.

Money is important because it goes without saying that it is an important pre requisite for survival. It is like actually saying the understood things of life like food and shelter. But the underlying factor is the fatalistic thinking that money is the elixir of life. One definitely needs to go beyond basic needs and save for a rainy day. It is an extremely pragmatic perspective and necessary too. One needs to respect money and protect it. But things start spiraling downwards when money starts gaining importance over other things. To covet money and not enjoy life, to not share it with the needy, to keep hankering for it and in continuum be obsessed with it is an unhealthy practice. Good health, a well -deserved break from normal routine, the company of good friends and the simple pleasures of life must not be replaced with this constant pursuit of money making.

Recently, a big business family from India had their son's pre marriage ceremonies celebrated with great ostentation. All the international news makers, film celebrities and the crème da la crème of the country and the world were there. It was money doing all the talking. But the cynosure was on the groom to be. It is obvious that he is not healthy and is suffering from a condition. His father, the richest man in this part of the continent cannot give his precious son good health with all his money. This is where the buck stops. We need to reflect on the nature of money that cannot buy the treasurable, intangible things in life. Most importantly, the thing is that it cannot be bought with money. Money insures life but it cannot guarantee its safety. Does money ensure a mindset? Perhaps. But it does not warranty a happy and a free soul. Given that argument, all the rich people in the world should have been happy. But there is a lot of sadness's inside those luxurious mansions. Money helps in shaping the dreams but to sustain the dreams and be happy with that sustainability requires a very balanced attitude. When greed replaces need- then the boundaries begin to blur. They become like the sea waves with no real control and real marking. Money making at the cost of health and time to oneself and the people to whom you matter is an insensitive gamble.

One must be comfortable enough to be able to make a healthy choice but if one is spoilt for choices – then it is time to make a call. There is another inspiring Indian family who pioneered the first multinational company in India. The family of Sudha Murthy and Narayan Murthy. They are rich but they are sensibly rich. Philanthropy is what they practice and lead such an exemplary simple and rich life that it goes on to prove that one can be rich and kind. One can have a lot of money and yet not be insane about it. The other example is that of the Tata group of companies and the person who leads it. Shri Ratan Tata comes from a legacy of industrialists who have been the greatest nation builders. Their money and profit making policies have always been centered on making the nation great. There is a lot to learn about the how the nature of money and the dynamics of it can be separated and magnificent things can be achieved if one treats money properly and in a righteous way.

Otherwise, we more or less belong to the category of some people who are so poor that they only have money.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

प्रेम का भूखा सारा संसार

इस संसार में मानव को सबसे अधिक भूख किसी चीज की है तो वह है प्रेम जिसके लिए वह इधर उधर कहाँ नहीं भागता फिरता है । पर अफसोस, वह प्रेम देना नहीं जानता है तो वह प्रेम पाएगा कैसे ? यही कारण है कि वह प्रेम का भूखा - प्यासा रहकर इस संसार से चला भी जाता है क्योंकि यह संसार कर्मलोक है । हम जो देंगे वही वापस पाएँगे । प्रेम देंगे तो प्रेम मिलेगा, ईर्ष्या - द्वेष देंगे तो ईर्ष्या - द्वेष मिलेगा । घृणा-नफरत देंगे तो घृणा और नफरत मिलेगी । निर्मल और निश्छल प्रेम भगवान राम और कृष्ण ने दिया तो उनको वही मिला वहीं रावण और कंस को भी वही मिला जो उन्होंने दिया । बुद्ध, महावीर, ईसा, हजरत सभी ने प्रेम बाँटा और प्रेम पाया । हम भी प्रेम बाँटेंगे तो क्यों नहीं प्रेम पाएँगे ।

माँ अपने शिशु से बेहद प्रेम करती है तो उनका वह नन्हा शिशु भी उन्हें वही देता है । पति और पत्नी, पिता और पुत्र, भाई और बहन इन सभी का रिश्ता प्रेम का है जो प्रेम से ही बढता है और प्रेम नहीं देने पर घटता है । जिसकी भी यह शिकायत है कि उसे कोई प्रेम नहीं करता वह एक बार अपने हृदय से पूछे कि वह औरों से कितना और किस हद तक प्रेम किया है । निर्मल और निश्छल प्रेम एक न एक दिन वापस जरूर आता है इसपर हमें सन्देह नहीं करना चाहिए । हम किसी से यह सोचकर प्रेम नहीं करते कि वह भी हमें प्रेम करेगा अपितु हमारा स्वभाव ही प्रेम करने का होना चाहिए । जिस तरह बादल जब बरसते हैं तो यह नहीं देखते कि इस घर में बरसें या उस घर में, सूरज जब अपनी किरणें बिखेरता है तो वह किसी विशिष्ट जगह का चयन नहीं करता अपितु समान भाव से सभी पर अपनी किरणें लुटाता है ठीक उसी तरह जब हमारा प्रेममय व्यक्तित्व हो जाता है तो हम यह नहीं देखते कि हम इसे प्रेम करें या उसे, हम सबपर समान भाव से प्रेम लुटाना सीख जाते हैं । संत- महात्मा यही तो करते हैं इसलिए वे सभी के प्रेमपात्र होते हैं । हम मनुष्यों को भी ऐसा ही बनना चाहिए क्योंकि हम प्रेम के कारण ही इस धरती पर आए हैं और प्रेम के कारण ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं फिर प्रेम देने में कैसा संकोच ? हम मानव प्रेम के प्रतीक हैं । प्रेम ही हमारे मन का सौन्दर्य होना चाहिए ।

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो वास्तव में, प्रेम आत्मा का संगीत है, प्रेम मन का गीत है । प्रेम हृदय का हृदय से गठबन्धन है । प्रेम है तो भावनात्मक विकास है, प्रेम है तो रचनात्मक क्षमताओं का विकास है, प्रेम है तो आत्मा का विकास है । जबतक आत्मा का विकास नहीं होगा तबतक परमात्मा से सच्चा सम्बन्ध स्थापित नहीं होगा क्योंकि परमात्मा प्रेम का ही दूसरा नाम हैं । परमात्मा को हम लाख फल-फूल, पत्र, धन आदि चढा दें उससे कुछ नहीं होगा पर प्रेम से एक तुलसी चढा दें उसी से परमात्मा का पलङा भारी हो जाता है । सबकी आत्मा परब्रह्म परमेश्वर का ही अंश है। जब मनुष्य प्रेम से परमात्मा को ही अनन्य भाव से भजने लगता है तब शरीर भले रहता है परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का परन्तु तब मानव मन परमात्मा का, परमात्मा के लिए, परमात्मा के द्वारा जीने लगता है ।

एक सच्चा प्रेमी सिर्फ अपने परिवार को ही अपना प्रेम तो नही बाँट सकता । वह तो प्रेम की गंगा बहाता चला जाता है और उन सभी प्यासों को प्रेम का प्याला पिलाता चला जाता है जो उसके पास बङी श्रद्धा और प्रेम से आते हैं । प्रेम किसी व्यक्ति के संकीर्ण दायरे में सिमटकर रह ही कहाँ सकता है ? और एक प्रेमी ही आज इस संसार को भावनात्मक अकाल से मुक्ति दिला सकता है । आज इस संसार में बहुतों के पास धन-दौलत आदि की कमी नहीं है । कमी है तो सिर्फ प्रेम की है । अगर इंसान इंसान से प्रेम करना सीख ले तो कैसी लङाई ? कैसे झगङे ? सब तरफ प्रेम की ही बयार बहेगी । सब तरफ प्रेम की ही फुहार होगी । स्वर्ग इस धरा पर उतरता हुआ महसूस होगा । मानव मन की नारकीय स्थिति का तिरोभाव हो जाएगा । यह संसार प्रेम वाटिका बन जाएगा और उस प्रेम वाटिका में भ्रमण होगा प्रेम प्रतीक भगवान कृष्ण और उनकी आह्लादिनी शक्ति राधा का तो आइए हम अपने मन को ही प्रेम का वृन्दावन बना दें और उठाएँ उसकी सुगंधित बयार का आनन्द । इसलिए तो आए हैं हम इस संसार में भ्रमण करने के लिए । हम प्रेम पथ के राही हैं, प्रेम हमारी प्यास है तो चलिए लुटाएँ प्रेम और पाएँ निर्मल प्रेम और मुस्कुराएँ सतत और अनवरत क्योंकि –

मुस्कुराहट का निश्छल अनुदान, मिलता है निश्छल प्रेमी को
जिसने निश्छल परमात्मा से, सदा निश्छल प्रेम किया ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **तीन लोक हैं - धरती, आकाश और पाताल। अंतरिक्ष लोक जिसे प्रकाश लोक कहते हैं, जहां ज्ञान रहता है। स्वर्ग लोक कहते हैं जहां देवता निवास करते हैं, पाताल लोक जहां अंधकार का वास होता है , अज्ञान जहां रहता है ,असुर वहां निवास करते हैं। धरती लोक इन तीनों का मिश्रण है। कभी यहां अंधकार रहता है तो नरक की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं, हाय - हाय मची रहती है, कलयुग की स्थिति बन गई है और कभी प्रकाश अवतरित होता है तो लगता है सतयुगी स्थिति उत्पन्न हो गई। धरती पर प्रकाश का अवतरण, स्वर्ग का अवतरण हो गया। दोनों के बीच धरती ऊपर- नीचे होती रहती है और उस धरती पर रहने वाला मनुष्य भी ऊपर- नीचे होता रहता है।**
- **धरती पर रहने वाला मनुष्य एक साथ देवता और असुरों का सम्मिश्रण है। इसलिए मनुष्य प्रज्ञावान भी है और मूढ़ है कभी मूढ़ता हावी होती है कभी प्रज्ञा प्रकाशित हो जाती है।**
- **आत्मा ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपको परमात्मा के अभिमुख और सम्मुख होना होगा और सारे रिश्ते उसी से जोड़ने पड़ेंगे।**
- **एक और एक मिलकर 11, यह रिश्तों का गणित है। एक और एक मिलकर दो, यह अंक गणित है। एक और एक घटकर शून्य, यह भी अंक गणित है। जहां एक और एक मिलकर एक हो, यह आध्यात्मिक गणित है।**
- **संसार चारों तरफ है- मन में संसार है, संस्कारों में संसार है। संसार परत- दर -परत है। लेकिन केंद्र में संसार नहीं है। संसार के केंद्र में संसार नहीं है, केंद्र की परिधि में संसार है। जब आप संसार से उबरते हैं, तो सभी से उबर जाते हैं, देवत्व से भी और असुरत्व से भी। पर यह बात बहुत मुश्किल से, बहुत जन्मों के बाद समझ में आती है।**
- **बल हमें निर्बल होने की अनुभूति होने नहीं देता और विचार हमें निर्विचार होने की अनुभूति पाने नहीं देता। जो बल होते हुए भी निर्बल होने की अनुभूति पाता है, जो विचार होते हुए भी निर्विचार होने की अनुभूति पाता है वही ज्ञानी होता है और यह केवल धरती पर संभव है।**
- **जब हमारा अस्तित्व विकल होकर के प्रभु को पुकारता है तो सारे असंभव संभव हो जाते हैं, फिर कुछ असंभव नहीं रह जाता है, पर विडंबना है हम सब चीज पर विश्वास करते हैं, भगवान पर नहीं करते हैं।**
- **भगवान का मतलब क्या है? भग मतलब विभूति, वान मतलब समूह। विभूतियों का समूह, आदर्श का समूह ।पर हम तर्क करते रहते हैं, हम गणित के सूत्र लगाते रहते हैं, हमारे पास जोड़ -घटाव है, गुणा -भाग है बहुत सारे विधि विधान हैं और हमारे पास बहुत सारी विद्याएं हैं लेकिन हमारे पास एक चीज नहीं है हमारे पास प्रेम नहीं है, परमेश्वर का संस्पर्श नहीं है।**
- **जो तर्क करता है उसे तथ्य प्राप्त होते हैं और जो भाव रखता है उसे भगवान प्राप्त होते हैं, जो भाव की सघनता रखता है उसे तो भगवान मिलते ही मिलते हैं।**
- **धरती पर जहां भी अवतार आते हैं असंख्यों को कर्म मुक्ति देते हैं, कर्मों का परिताप करते हैं ।जैसे कि जेल की यातना, जेल की यंत्रणा, वर्षों -वर्षों का कष्ट उनके आने से क्षण भर में दूर हो जाता है और जो सच्चे भक्त होते हैं उन्हें गुरु के रूप में स्वीकारते हैं ।**
- **भगवान जो वरदान देते हैं, जो आशीर्वाद देते हैं वह समय अनुसार फलित होता है।**
- **जब कोई राम आते हैं, कृष्ण आते हैं, बुद्ध आते हैं तो किसी परिवार के लिए नहीं आते। सिर्फ आंगन में ही सूर्य नहीं चमकता है ,सूर्य आकाश में चमकता है और संपूर्ण धरती ही आंगन बन जाती है, जहां उसकी किरणें फैलती है। तो राम आए तो सभी के मन में प्रसन्नता है, उनके भी जिनके मन में संसार लेश मात्र भी नहीं है, उनके मन में भी जिनके मन में सांसारिकता भी नहीं है। जिनको घर-परिवार की सुधि कभी आई ही नहीं, जो संबंधों में कभी परे ही नहीं उन्हें भी भारी प्रसन्नता है। क्योंकि राम हैं परमात्मा। स्वयं प्रकृति के**

आंगन में, प्रकृति की गोद में विचरण करने के लिए आए हैं। न जाने कितनों के पाप-ताप-शाप मुक्त होंगे, खत्म होंगे। जहां वे आए, जहां वे रहेंगे, जहां वे लीला करेंगे, वह हर जगह तीर्थ होगा। जहां उन्होंने सबसे पहले पांव रखें ,सबसे पहले लीला करी वह जगह तो परम तीर्थ हो गया, जिसे अयोध्या कहते हैं ।अयोध्या सप्त मोक्षदायिनी पुरियों में से एक है ,जो परम तीर्थ है।

- जिसके हृदय में परमात्मा उतर आता है वह देह भी तीर्थ हो जाता है।
- भगवान अनंत हैं तो उनके अवतरित होने के कारण भी अनंत हैं। दुष्टों का नाश करना, भक्तों को सुख देना, शापितों को मुक्त करना, प्रताड़ितों को मुक्त करना, न जाने कितने उद्देश्य लेकर भगवान धरती पर आते हैं।
- मनुष्य को अगर ज्ञान प्राप्त करना है, जीवन की विद्या सीखनी है, जीवन की गूढ़ता सीखनी है तो राम मनुष्य मात्र के शिक्षक हैं, गुरु हैं, आदर्श हैं।
- राम हमारे पास हमारे होकर, हमारे साथ रहते हैं। राम भूमि पर रहने वाले हमारे जीवन में सहभागिता निभाने वाले, हमारे साथ-साथ चलने वाले भगवान हैं।
- राम की प्रतिष्ठा का मतलब है मनुष्य की प्रतिष्ठा, मनुष्यता की प्रतिष्ठा।

अप्रैल माह की गतिविधियाँ

दिनांक 07/04/24- परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा -हम ऋषियों की संतान हैं। हमारे पूर्वज ऋषि थे।विवेकानंद ने कहा था समझ, विवेक तब विकसित होता है जब दुनियाँ छोड़ने का वक्त आता है।आप सभी का अभी जाने का वक्त नहीं है।आप सभी अपनी समझ को विकसित कीजिए।

नये सत्र का ज्ञान दीक्षा समारोह तथा पुराने बैच का दीक्षांत समारोह

दिनांक 07/04/24- गायत्री शक्तिपीठ में गायत्री परिवार ट्रस्ट के अंतर्गत कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान जो पिछले 10 वर्षो से अबतक 4100 बच्चों को प्रशिक्षण देता आ रहा है।उसी क्रम में आज कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के नये सत्र का ज्ञान दीक्षा समारोह तथा पुराने बैच का दीक्षांत समारोह(समावर्तन समारोह) दीप प्रज्वलित कर हुआ।दीप प्रज्वलन में डाक्टर कल्याणी सिंह, उमा जायसवाल, एम एल टी कालेज के प्राचार्य पंकज कुमार यादव, गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी श्री जीवन सिंह, डाक्टर गौतम सिंडिकेट सदस्य,ईन्जीनियर पूनम ईन्जिनयरिंग कालेज, सहरसा हरिश जायसवाल एवं प्रियवर्त कुमार के द्वारा किया गया। इन लोगों का स्वागत तिलक लगाकर मंत्र दुपट्टा से जिला संयोजक ललन कुमार सिंह, सिंधु देवी और आनंद चेतन के द्वारा किया गया। अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल कहा-दीक्षा क्या है? किसी साधना में संकल्प पूर्वक लक्ष्य बनाकर प्रवेश करना दीक्षा है।वस्तुतः यह ज्ञान की साधना है। शिक्षा का कार्य है संसार में सफल होना एवं विद्या का काम है जीवन में सफल होना। जीवन को समझना,सीखना एवं सिखाना हीं जीवन विद्या है।यहां व्यक्तित्व परिष्कार सत्र के द्वारा छात्र एवं छात्राओं का समग्र विकास किया जाता है।चिंतन की विकृति को दूर करने के लिए गायत्री मंत्र द्वारा सभी का आत्मबल मनोबल बढ़ाया जाता है।इस अवसर पर कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के पुराने बैच के उत्तीर्ण छात्र/ छात्राओं को प्रमाण पत्र दिया गया एवं परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को उपहार स्वरूप एक एक लैपटाप दिया गया। प्रथम स्थान पाने वाली छात्रा-संजना कुमारी,द्वितीय स्थान पाने वाला छात्र-आदित्य कुमार तथा तृतीय स्थान पाने वाली छात्रा कनक नंदनी को मिला। ज्ञातव्य हो कि प्रशांत जायसवाल के द्वारा यह लैपटाप उपहार स्वरूप प्रत्येक बैच में दिया जाता है। विगत दो वर्षों से मद्रास के विनित साबू का पुरस्कार में भाव बढ़ा सहयोग मिल रहा है। कार्यक्रम में प्रशांत जायसवाल की माताजी उमा जायसवाल उपस्थित थी।कार्यक्रम को डाक्टर कल्याणी सिंह ने संबोधित करते हुए कहा-समाज के लिए तथा यहाँ के छात्र छात्राओं की आध्यात्मिक उन्नति के लिए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल लगातार प्रयासरत हैं। प्राचार्य पवन कुमार यादव ने कहा- यहां हम भौतिक जगत से निकल कर आध्यात्मिक जगत में पहुँच गए हैं। प्रोफेसर गौतम एवं प्रोफेसर पूनम ने भी सत्र को संबोधित किया।

चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन आये श्रद्धालुगण

दिनांक 09/04/24- चैत्र बासंती नवरात्रि यानी बासंती नवरात्रि कलश स्थापन की स्थापना के साथ प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-बसंत क्या है? सृष्टि का जन्मोत्सव है।प्रकृति का सृंगार है। कहते हैं चैत्र प्रतिपदा को ब्रह्माजीने सृष्टि का सृजन किया। बासंती नवरात्रि पुरूष और प्रकृति के मिलन का पर्व है।बसंत ऋतु को ऋतुराज भी कहा जाता है। यह संधिकाल है जाडा और गर्मी का मिलन काल है। नवरात्रि का मतलब नौ सीढ़ियां। हम नौ दिनों साधना में एक एक कदम बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा नवरात्रि का प्रथम दिन मां आदिशक्ति शैलपुत्री का दिन है।आज हम आधार चक्र का ध्यान कहते हुए जप करेंगे, जिससे हमारी अंदर की ऊर्जा का जागरण होगा। मन शांत और तन स्थिर होगा तभी माता शैलपुत्री का आगमन हमारे अंदर हो पायेगा। शैलपुत्री का मतलब है हिमालय की पुत्री।हिमालय स्थिरता का प्रतीक है। जब तन स्थिर और मन शांत हो जाता है जाता है तभी साधना की शुरुआत हो पाती है। जीवन में कोई भी साधना, कोई भी तपस्या बिना स्थिरता के पूरी नहीं हो सकती। पार्वती साधना के लिए जानी जाती है। इन नौ दिनों तक हमारे तन को स्थिर और मन को शांत होनी चाहिए तभी साधना हो पायेगी। उन्होंने कहा-मां दुर्गा और गायत्री अलग नहीं है।मां दुर्गा के सहस्र नाम में एक नाम गायत्री है और गायत्री के सहस्र नाम में एक नाम दुर्गा है। गायत्री मंत्र के नौ चरण में नौ शब्द है।नौ दिनों तक एक एक चरण की साधना हमलोग करते चले जाएंगे। नौ शब्द के तीन चरण है।तत्सवितुर्वरेण्यं-महाकाली।तमोगुण हटाएगी। भर्गोदेवस्य धी महि-महा लक्ष्मी,हमारे अंदर रजोगुण को नियंत्रित करेगी।तीसरा चरण है धीयोयोनः प्रचोदयात- महा सरस्वती हमारे अंदर सतोगुण को प्रवेश कराएंगी। गायत्री मंत्र का जप करने से महाकाली, महालक्ष्मी और महा सरस्वती की साधना हो जाती है। इसलिए गायत्री को त्रिपदा कहा जाता है।महा काली प्रकाश का वरण है, महा लक्ष्मी प्रकाश को धारण है तथा महा सरस्वती प्रकाश की ओर गमन है। इस अवसर पर कलश की स्थापना पूरे विधि-विधान के साथ किया गया। पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देव कन्या मनीषा, मधु,तथा युक्ति ने करवाया। अनुष्ठान के मुख्य यजमान आनंद चेतन और उनकी पत्नी ज्योति चेतन थी। इस अवसर पर लगभग 800 से ज्यादा परिजनों ने 24000 गायत्री मंत्र जप के अनुष्ठान का संकल्प लिया।

चैत्र नवरात्रि प्रथम दिवस संध्याकालीन आरती में उपस्थित श्रद्धालुगण

दिनांक 17/04/24- गायत्री शक्तिपीठ में चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति की वेला में डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- नौ दिनों की साधना का प्रतिफल आज मिलने वाला है।यदि साधक संयम और अनुशासन के साथ इन नौ दिनों की साधना संपन्न करता है तो मां गायत्री का विशेष अनुदान वरदान मिलकर रहता है। गायत्री शक्तिपीठ के उपासना कक्ष में नौ दिनों तक वैदिक मंत्रों के उच्चारण से यहां का वातावरण भक्ति मय, उत्सव मय एवम् आध्यात्मिक रहा। उत्सव आत्मा का स्वभाव है। डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा भगवान राम का जन्म चैत्र नवमी को हुआ इसलिए उस दिन को राम नवमीं कहते हैं। सत्ता के कण-कण में जो तत्व है वो राम है।अपने को विस्मृत करके ही राम की कृपा प्राप्त की जा सकती है।भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने के कारण और अपने को विस्मृत करने के कारण हनुमान भक्त राज कहलाए। नवरात्रि साधना वस्तुतः शक्ति संचय की साधना है। संचित शक्ति का सदुपयोग करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। इस अवसर पर अंतरिक्ष से धरती पर विशेष उर्जा का अवतरण होता है। सायंकालीन सत्र में प्रतिदिन राम के प्राकट्य पर विस्तृत चर्चा हुई। डॉक्टर जायसवाल ने कहा राम नाम के जप की महिमा अनंत है। जो राम नाम का रस पी लेते हैं उसके जीवन के सारे दुख मिट जाते हैं। पुर्णाहुति के अवसर पर सभी परिजनों के अलावा शहर की जनता ने यज्ञ में में गायत्री मंत्र की आहुति प्रदान की । लगभग पाँच हज़ार लोगों ने महाप्रासाद के रूप में अमृतासन खिचड़ी ग्रहण किया। इस अवसर पर ओम प्रकाश गुप्ता द्वारा 108 फलदार पौधा का वितरण किया गया।

चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति की देव दुर्लभ वेला

कुंवारी कन्या प्रसाद ग्रहण करते हुए

महाप्रसाद ग्रहण करने का दृश्य

महाप्रसाद बाँटने का दृश्य

युवामण्डल, युवतीमण्डल, जिनकी मेहनत हमेशा से रंग लाती रही है

दिनांक 26 अप्रैल को सहरसा के साहपुर गांव के मां गायत्री विद्यापीठ में बच्चों के बीच Divine Workshop का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को स्वस्थ्य रहने के टिप्स के साथ साथ छात्र जीवन से संबंधित समस्या एवम समाधान की बातें बताई गई

प्रत्येक महीने के अंतिम रविवार की तरह दिनांक 28/04/2024 (रविवार) को सहरसा जिला के घैलाढ़ प्रखंड के अंतर्गत कमलपुर गांव में 24 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरण किया गया।

यज्ञ करती हुई विद्यालय की छात्राएं

विद्यालय के बच्चों के बीच गायत्री यज्ञ कराती युवती मंडल

गायत्री परिवार सहरसा के कार्यकर्ता

दीवार लेखन करते युवा भाई

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

दैनिक भास्कर

सहरसा 08-04-2024

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र • शक्तिपीठ में नए सत्र का ज्ञान दीक्षा और पुराने बैच के दीक्षांत समारोह

'साधना में संकल्पपूर्वक लक्ष्य बनाकर प्रवेश ही दीक्षा'

भास्कर न्यूज़ | सहरसा

हम ऋषियों के संतान हैं। हमारे पूर्वज ऋषि थे।विवेकानंद ने कहा था समझ,विवेक तब विकसित होता है जब दुनियां छोड़ने का वक्त आता है।ये बातें डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने रविवार को स्थानीय गायत्री शक्ति पीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कही। गायत्री परिवार ट्रस्ट द्वारा संचालित कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान में नए सत्र का ज्ञान दीक्षा एवं पुराने बैच के दीक्षांत समारोह पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ जायसवाल ने बताया कि संस्थान द्वारा पिछले दस वर्षों में 4100 बच्चों को कंप्यूटर की शिक्षा दी गई है। डॉ जायसवाल ने दीक्षा के संबंध में बताते हुए कहा कि किसी साधना में संकल्प पूर्वक लक्ष्य बनाकर प्रवेश करना ही दीक्षा है।

कार्यक्रम में शामिल डॉ. अरुण जायसवाल व मौजूद अन्य।

डॉ संबोधित करती लार्ड बुद्धा कोसी मेडिकल कॉलेज की चेयरमेन व स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ कल्याणी सिंह ने कहा कि समाज के लिए तथा यहां के छात्र छात्राओं के आध्यात्मिक उन्नति के लिए डॉ अरुण कुमार जायसवाल प्रयत्नशील हैं। प्राचार्य डॉ पवन कुमार यादव ने कहा कि यहां हम भौतिक जगत से निकल कर आध्यात्मिक जगत में पहुंच गए हैं। इससे पहले प्रसिद्ध महिला चिकित्सक डॉ कल्याणी सिंह, उषा जायसवाल, एम एल टी कालेज के प्राचार्य पंकज कुमार यादव, गौतम भगत, हरीश जायसवाल एवं प्रियव्रत के द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

छात्र-छात्राओं को दिया गया प्रमाण-पत्र

कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के पुराने बैच के उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए एवं परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा संजना कुमार, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र आदित्य कुमार एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा कनक नंदनी को उपहार स्वरूप एक एक लैपटाप दिए गए। ज्ञातव्य हो कि प्रशांत जायसवाल के द्वारा यह लैपटाप उपहार स्वरूप प्रत्येक बैच में दी जाती है।इस कार्य में मद्रास के विनित साहू का भी सहयोग मिलता है।कार्यक्रम में प्रशांत जायसवाल की माता उषा जायसवाल भी उपस्थित थी। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में ट्रस्ट की बैठक हुई। जिसमें मंदिर कार्यकारिणी सदस्यों की समीक्षा की गई तथा अखंड ज्योति पत्रिका के पाठक की संख्या कैसे बढ़े इस मुद्दे पर भी चर्चा हुई। साथ ही बताया गया कि 9 अप्रैल को 7 बजे सुबह चैत नवरात्र अनुष्ठान का कलश स्थापन एवं पूजन विधि-विधान से होगी। इस अवसर पर रविवार को सभी प्रकार के संस्कार संपन्न होंगे।नवरात्र का पूर्णाहुति 17 अप्रैल को होगी।

जीवन को समझना, सीखना ही है जीवन विद्या

संस, सहरसा : रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा -हम ऋषियों के संतान हैं। हमारे पूर्वज ऋषि थे। विवेकानंद ने कहा था समझ, विवेक तब विकसित होता है जब दुनियां छोड़ने का वक्त आता है। आप सभी का अभी जाने का वक्त नहीं है। आप सभी अपने समझ को विकसित कीजिए। इस मौके पर गायत्री शक्तिपीठ में गायत्री परिवार ट्रस्ट के अंतर्गत कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के नए सत्र का ज्ञान दीक्षा समारोह तथा पुराने बैच का दीक्षांत समारोह (समावर्तन समारोह) का डा. कल्याणी सिंह, उषा जायसवाल, एमएलटी कालेज के पंकज कुमार यादव, सिंडिकेट सदस्य डा. गौतम, ई. पूनम, हरिश जायसवाल एवं प्रियव्रत ने दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया।

शक्तिपीठ के जिला संयोजक ललन कुमार सिंह, सिंधु देवी और आनंद ने सभी अतिथियों का तिलक लगाकर एवं मंत्र दुपट्टा से स्वागत किया गया। इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल कहा- दीक्षा काया है। किसी साधना में संकल्प पूर्वक लक्ष्य बनाकर प्रवेश करना दीक्षा है। वस्तुतः यह ज्ञान की साधना है। शिक्षा का कार्य है संसार में सफल होना एवं जीवन विद्या का काम है। जीवन में सफल होना। कहा कि जीवन को समझना, सीखना एवं सिखाना ही जीवन विद्या है। यहां व्यक्तित्व परिष्कार सत्र के द्वारा छात्र एवं छात्राओं का समग्र विकास किया जाता है। चिंतन की विकृति को दूर करने के लिए गायत्री मंत्र द्वारा सभी का आत्मबल मनोबल बढ़ाया जाता है। इस अवसर पर कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के पुराने बैच के उत्तीर्ण छात्र/ छात्राओं को प्रमाण पत्र दिया गया एवं परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को उपहार स्वरूप एक- एक लैपटाप दिए गए। जिसमें प्रथम स्थान पाने वाले छात्रा-संजना कुमारी, द्वितीय स्थान पाने वाले छात्र- आदित्य कुमार तथा तृतीय स्थान पाने वाली छात्रा कनक नंदनी शामिल हैं। ज्ञातव्य हो कि प्रशांत जायसवाल के द्वारा यह लैपटाप उपहार स्वरूप प्रत्येक बैच में दी जाती है। इस कार्य में मद्रास के विनीत साहू का भी सहयोग मिलता है। कार्यक्रम में प्रशांत जायसवाल की मां उषा जायसवाल भी उपस्थित थी।कार्यक्रम को संबोधित करतीडा. कल्याणी सिंह ने सं कहा कि समाज के लिए तथा यहां के छात्र-छात्राओं को आध्यात्मिक उन्नति के लिए डा. अरुण कुमार जायसवाल प्रयत्नशील हैं।प्राचार्य पवन कुमार यादव ने कहा कि यहां हम भौतिक जगत से निकल कर आध्यात्मिक जगत मेंपहुंच गए हैं। प्रो. गौतम एवं पूनम ने भी सत्र को संबोधित किए। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में ट्रस्ट की बैठक हुई। इसमें मंदिर कार्यकारिणी सदस्यों की समीक्षा की गई।

ज्ञान दीक्षा समारोह मे उपस्थित अतिथि व छात्र- छात्रा • सौजन्य : शक्तिपीठ

वासंतिक नवरात्र में परिजनों ने 24000 गायत्री मंत्र जाप अनुष्ठान का लिया संकल्प

मीडिया लाइव न्यूज,सहरसा।

गायत्री शक्तिपीठ में चैत्र वासंतिक नवरात्रि कलश स्थापन के साथ धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- बसंत क्या है।सृष्टि का जन्मोत्सव है। कहते हैं चैत्र प्रतिपदा को ब्रह्माजी ने सृष्टि का सृजन किया था।आज बासंती नवरात्रि का प्रथम दिन है। वसंत क्या है प्रकृति का श्रृंगार है। बासंती नवरात्रि पुरूष और प्रकृति के मिलन का पर्व है। बसंत ऋतु को ऋतुराज भी कहा जाता है। बसंत में जीवन का नया आयाम काल होता है। यह संधिकाल है जाड़ा और गर्मी का मिलन काल है। बासंती नवरात्रि का मतलब नई सीढ़ियां है। हम नौ दिनों तक एक एक कदम बढाएंगे। उन्होंने नवरात्रि का प्रथम दिन मां आदिशक्ति शैलपुत्री स्वरूप की पूजा होती है। दूसरे दिन मां कर ब्रम्हचारिणी रूप की पूजा की गई। हम आधार चक्र का ध्यान कहते हुए पूजन करेंगे। हमारे अंदर की उर्जा का जागरण होगा, फिर हमारे अंदर स्थिरता आएगी तभी माता शैलपुत्री का आगमन हमारे अंदर हो पायेगा। शैलपुत्री यानी स्थिर मन। शैलपुत्री का मतलब है हिमालय की पुत्री।हिमालय स्थिरता का प्रतीक है।जीवन जब स्थिर हो जाता है, तन और मन जब स्थिर हो जाता है तभी हमारी साधना फलवती होती है।जीवन में कोई भी साधना कोई भी तपस्या बिना स्थिरता पूरी नहीं हो सकती। पार्वती साधना के लिए जानी जाती है। अगर स्थिरता है तो साधना है। इस नौ दिनों तक हमरे तन को और मन को शांत होनी चाहिए तभी आप साधना कर पाएंगे। उन्होंने कहा-मां दुर्गा और गायत्री अलग नहीं है। मां दुर्गा के सहस्र नाम में एक नाम गायत्री का है और गायत्री के सहस्र नाम में एक नाम दुर्गा का है। गायत्री मंत्र के नौ चरण में नौ शब्द है। नौ

दिनों तक एक एक चरण की साधना हमलोग करते चले जाएंगे। नौ शब्द के तीन चरण है। तत्सवितुर्वरेण्यं-महा काली।तमोगुण हटाएगी। भर्गोदेवस्य धी महि-महा लक्ष्मी, हमारे अंदर रजोगुण को नियंत्रित करेगी।तीसरा चरण है धीयो यो नः प्रचोदयात।

महा सरस्वती हमारे अंदर सतोगुण को प्रवेश करे। गायत्री मंत्र करने से महाकाली महालक्ष्मी और महासरस्वती की साधना हो जाती है। गायत्री को त्रिपदा कहा जाता है। महासरस्वती प्रकाश का वरण करें, प्रकाश को धारण करें तथा गमन करेंगे। इस अवसर पर चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन कलश की स्थापना विधि-विधान से पूजन अर्चन के साथ की गई थी। तथा जयन्ती जन्माया गया। पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देव कान्या मनीषा, मधु तथा युक्ति ने करवाई। पूजन के मुख्य यजमान आनंद चेतन सपत्नी मौजूद थे। इस अवसर पर लगभग 800 से अधिक परिजनों ने 24000 गायत्री मंत्र जाप अनुष्ठान का संकल्प लिया। वहीं, नवरात्रि का पूर्णाहुति 17 अप्रैल को होगी। इस अवसर पर सभी प्रकार के संस्कार संपन्न होंगे।

क्रोस | मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश

शरीर आर मन जखन स्थिर होयत तखने हमर साधना फलदायी होयत

सहरसा | समदिया

मंगलदिन गायत्री शक्तिपीठ पर कलश स्थापनाक संग चैत्रक वासंतिक नवरात्रि धूमधाम स मनाओल गेल।एहि अवसर पर डॉ. अरुण कुमार जायसवाल कहलनि - वसंत की होइत अछि, सृष्टिक जन्मोत्सव अछि। कहल जाइत अछि जे चैत्र प्रतिपदा भगवान ब्रह्म द्वारा मनाओल जाइत अछि।जे ब्रह्माण्ड केर रचना कयलनि।आइ वसंती नवरात्रि के पहिल दिन अछि।वसन्त की होइत छैक ई प्रकृतिक अलंकार थिक वसन्ती नवरात्रि मनुष्य आ प्रकृतिक मिलन पर्व थिक। वसन्त ऋतु कैं ऋतुराज सेहो कहल जाइत छैक।वसन्त मे जीवनक नव आयाम होइत छैक ई जाड़ आ ग्रीष्मक संक्रमण काल होइत छैक।वसन्ती नवरात्रि माने नव सीढ़ी। हम सब नौ दिन तक एक डेग एक डेग आगू बढ़ब।ओ कहलनि - आई नवरात्रि केर पहिल दिन अछि माँ आदिशक्ति शैलपुत्री आई ध्यान क आधार चक्र कए पूजा करब।आइ हमरा सबहक भीतर केर ऊर्जा जगायल जायत, तखन भीतर स्थिरता आबि जायत हमरा सभकैं, तखने माता शैलपुत्री।हमरा सभक भीतर आबि सकत। शैलपुत्री के अर्थ छै स्थिर मन शैलपुत्री कए मतलब छै हिमालय कए बेटी ।हिमालय स्थिरताक प्रतीक छै ।जखन जीवन स्थिर भ जाय छै, शरीर आर मन जखन स्थिर होयत तखने हमर साधना फलदायी होयत।जीवन में कोनो साधना बिना स्थिरता पूर्ण नहि भ सकैत अछि।पार्वती ध्यान लेल जानल जाइत अछि।जँ स्थिरता अछि तखन ई साधना छै, हमरा सब कए तन-मन ई नौ दिन शान्त रहबाक चाही, तखने अहाँ साधना क सकब।ओ कहलनि - माँ दुर्गा आ गायत्री अलग-अलग नहि।माँ दुर्गा क हजारों नाम मे एकटा नाम गायत्री अछि आ गायत्री के हजारों नाम में एकटा नाम दुर्गा अछि। गायत्री मंत्र के नौ चरण में नौ शब्द अछि। हम सब नौ दिन तक प्रत्येक चरण के साधना करैत रहब। नौ शब्दक तीन चरण होइत अछि तत्सवितुर्वरेण्यम- महा काली तमोगुण कैं दूर करत। भर्गोदेवस्य धी महि-महालक्ष्मी हमरा सबहक भीतर राजोगुण पर नियंत्रण राखत।तेसर चरण अछि धियो यो नः प्रचोदयत।महा सरस्वती हमरा सबहक भीतर सतोगुण मे प्रवेश करथि।गायत्री मंत्र के जाप स महाकाली, महालक्ष्मी आ महासरस्वती केर उद्धार होइत अछि। गायत्री कए त्रिपद कहल जाइत अछि महासरस्वती प्रकाश चुनैत छथि, प्रकाश पहिरैत छथि आ जायत छथि, एहि अवसर पर चैत्र नवरात्रि के पहिल दिन संस्कार आ पूजा के संग कलश आ जयंतीक स्थापना भेल।पूजाक संस्कार शक्तिपीठक देवता पुत्री मनीषा, मधु आ युक्ति द्वारा कयल गेल।पूजा कए मुख्य मेजबान आनंद चेतन आ हुनक पत्नी उपस्थित छलाह। एहि अवसर पर ८०० स बेसी परिवार क सदस्य २४ हजार गायत्री मंत्र जाप क प्रण लेलनि।नवरात्रि के पूर्णाहुति रामनवमी दिन 17 अप्रैल के होयत आ एहि अवसर पर सब तरहक संस्कार कयल जायत।

राम नाम का रस पीते हैं उसके जीवन के सब दुख मिट जाते हैं

सहरसा शहर/चौथी वाणी। गायत्री शक्तिपीठ में चैत्र नवरात्रि का समापन यज्ञ हवन अनुष्ठान के साथ वृक्षारोपण कर किया गया। इस नवरात्र की पूणार्हुति की वेला में डा0 अरुण कुमार जायसवाल ने कहा नौ दिनों की साधना का प्रतिफल आज मिलने वाली है। यदि साधक संयंम और अनुशासन के साथ इन नौ दिनों की

साधना संपन्न करे तो मां गायत्री का विशेष अनुदान वरदान मिलकर रहता है। भारत वर्ष में चैत्र मास के प्रारंभ में हीं शक्ति का आवाहन किया जाता है। मां की पूजन अनेक विधि-वधियो से किया जाता है। नवरात्रि की उत्सव वेला में गायत्री शक्तिपीठ की उपासना कक्ष में नौ दिनों से वैदिक मंत्रों के उच्चारण से यहां का वातावरण भक्ति में आध्यात्मिक रहा। उत्सव आस्था का स्वभाव है। उन्होंने कहा भगवान राम का जन्म रामनवमी की पावन अवसर पर हुआ। सत्ता के कण-कण में जो सत्ता है वो राम है। अपने को विस्मृत करके हीं राम की कृपा प्राप्त की जाती है। भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने के कारण हनुमान भक्त राज कहलाए। नवरात्रि साधना वस्तुतः शक्ति संचय की साधना है। संचय, शक्ति का सदुपयोग करना हीं मानव जीवन का लक्ष्य है। तप एवं साधना के द्वारा विशिष्ट शक्ति धाराओं आकर्षित किया जाता है। इस अवसर पर अंतरिक्ष से धरती पर विशेष उर्जा का अवतरण होता है। अतः संचय की विशेष आवश्यकता होती है। सायंकालीन सत्र में प्रत्येक संध्या राम नाम की जप की महिमा अनंत है। राम नाम का रस पी लेते हैं उसके जीवन के सब दुख मिट जाते हैं। पुणार्हुति के अवसर पर सभी परिजन, हवन गायत्री मंत्र की आहुति प्रदान की की गई। इस अवसर पर आम प्रकाश गुप्ता द्वारा 105 पौधा एवं फलदार पौधा वितरण किए गए।

गायत्री शक्तिपीठ में यज्ञ हवन अनुष्ठान के साथ नवरात्र पर्व का हुआ समापन

मीडिया लाइव न्यूज, सहरसा।

गायत्री शक्तिपीठ मे चैत्र नवरात्रि का समापन यज्ञ, हवन, अनुष्ठान के साथ वृक्षारोपण कर किया गया। इस नवरात्र की पूर्णाहुति की वेला मे डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा नौ दिनों की साधना का प्रतिफल आज मिलनेवाली है। यदि साधक संयम और अनुशासन के साथ इन नौ दिनों की साधना संपन्न करे तो मां गायत्री का विशेष अनुदान वरदान मिलकर रहता है। भारत वर्ष में चैत्र मास के प्रारंभ में हीं शक्ति का आह्वान किया जाता है। मां की पूजन अनेक विधियों से किया जाता है। नवरात्रि की उत्सव वेला में गायत्री शक्तिपीठ की उपासना कक्ष में नौ दिनों से वैदिक मंत्रों के उच्चारण से यहां का वातावरण भक्तिमय एवं आध्यात्मिक बना रहा।उत्सव आस्था का स्वभाव है। उन्होंने कहा भगवान राम का जन्म रामनवमी की पावन अवसर पर हुआ। सत्ता के कण-कण में जो सत्ता है वो राम है। अपने को विस्मृत करके हीं राम की कृपा प्राप्त की जाती है। भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने के कारण हनुमान भक्त राज कहलाए। नवरात्रि साधना वस्तुतः शक्ति संचय की साधना है। संचय, शक्ति का सदुपयोग करना हीं मानव जीवन का लक्ष्य है।तप एवं साधना के द्वारा विशिष्ट शक्ति धाराओं को आकर्षित किया जाता है। इस अवसर पर अंतरिक्ष से धरती पर विशेष उर्जा का अवतरण होता है। अतः संचय की विशेष आवश्यकता होती है। सायंकालीन सत्र में प्रत्येक संध्या राम नाम की जप की महिमा अनंत है। जो, राम नाम का रस पी लेते हैं उसके जीवन के सब दुख मिट जाते हैं। पूर्णाहुति के अवसर पर सभी परिजन, हवन गायत्री मंत्र की आहुति प्रदान की की गई। इस अवसर पर ओम प्रकाश गुप्ता द्वारा 105 पौधा एवं फलदार पौधे वितरण किए गए।

गायत्री शक्ति पीठ में पूर्णाहुति में श्रद्धालु शामिल

भास्कर न्यूज|सहरसा

बुधवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति के अवसर पर बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालु हवन कार्यक्रम में शामिल हुए। चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि नवरात्रि साधना वस्तुतः शक्ति संचय की साधना है। संचय शक्ति का सदुपयोग करना हीं मानव जीवन का लक्ष्य है। तप एवं साधना के द्वारा विशिष्ट शक्ति धाराओं आकर्षित किया जाता है। इस अवसर पर अंतरिक्ष से धरती पर विशेष उर्जा का अवतरण होता है। अतः संचय की विशेष आवश्यकता होती है। नौ दिनों की साधना का प्रतिफल पूर्णाहुति है। उन्होंने कहा कि भगवान राम का जन्म रामनवमी के पावन अवसर पर हुआ। सत्ता के कण-कण में जो सत्ता है वो राम है। इस अवसर पर आम प्रकाश गुप्ता द्वारा 105 पौधा एवं फलदार पौधा वितरण किए गए।

गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित पूर्णाहुति कार्यक्रम में बुधवार को भाग लेते लोग।

विस्मृत कर प्राप्त होती है राम की कृपा

संवाद सहयोगी, जागरण • सहरसा: बुधवार को गायत्री शक्तिपीठ में हवन यज्ञ के साथ चैत्र नवरात्रि अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई। मौके पर पांच-सौ से अधिक महिला पुरूष श्रद्धालुओं ने यज्ञ में अपनी आहुति दी और भोजन प्रसाद ग्रहण कर नवरात्र पूर्ण किया। ट्रस्टी अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि नौ दिनों की साधना का प्रतिफल श्रद्धालुओं का हवन के साथ प्राप्त होगा। यदि साधक संयम और अनुशासन के साथ इन नौ दिनों की साधना संपन्न करें तो मां गायत्री का विशेष अनुदान वरदान उन्हें जरूर प्राप्त होता है। कहा कि भारतवर्ष में चैत्र मास के प्रारंभ में ही शक्ति का आह्वान किया जाता है। मां की पूजा अनेक विधि-विधान से किया जाता है।

नवरात्रि की उत्सव बेला में गायत्री शक्तिपीठ की उपासना कक्ष में नौ दिनों से वैदिक मंत्रों के उच्चारण से यहां का वातावरण भक्ति में आध्यात्मिक रहा। कहा कि उत्सव आस्था का स्वभाव है। भगवान राम का जन्म, रामनवमी की पावन अवसर पर हुआ। सत्ता के कण-कण में जो सत्ता है वह राम है। अपने को विस्मृत कर ही राम की कृपा प्राप्त की जाती है। भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने के कारण हनुमान भक्त राज कहलाए। नवरात्रि साधना वस्तुतः शक्ति संचय का साधना है। संचय शक्ति का सदुपयोग करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। तप एवं साधना के द्वारा विशिष्ट शक्ति धाराओं को आकर्षित किया जाता है। इस अवसर पर अंतरिक्ष से धरती पर विशेष ऊर्जा का अवतरण होता है। इसलिए संचय की विशेष आवश्यकता होती है। पूर्णाहुति के अवसर पर सभी परिजन, हवन गायत्री मंत्र की आहुति प्रदान की गई। इस अवसर पर ओम प्रकाश गुप्ता द्वारा 105 फलदार पौधा वितरण किया गया।

पूजन कर्म कराते ट्रस्टीछाया : गायत्री शक्तिपीठ • जागरण

राम नाम का रस जो पी लेते हैं उनके जीवन के मिट जाते हैं दुख

पूजा–अर्चना करते श्रद्धालु.

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति की वेला में बुधवार को डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि नौ दिनों की साधना का प्रतिफल आज मिलने वाली है. साधक संयम एवं अनुशासन के साथ इन नौ दिनों की साधना संपन्न करे तो मां गायत्री का विशेष अनुदान वरदान मिलकर रहता है. भारतवर्ष में चैत्र मास के प्रारंभ में ही शक्ति का आवाहन किया जाता है. मां की पूजन अनेक विधि-वधियों से किया जाता है. नवरात्रि की उत्सव वेला में गायत्री शक्तिपीठ की उपासना कक्ष में नौ दिनों से वैदिक मंत्रों के उच्चारण से यहां का वातावरण भक्ति में आध्यात्मिक रहा. उत्सव आस्था का स्वभाव है. उन्होंने कहा कि भगवान राम का जन्म रामनवमी की पावन अवसर पर हुआ. सत्ता के कण-कण में जो सत्ता है वो राम है. अपने को विस्मृत करके ही राम की कृपा प्राप्त की जाती है. भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने के कारण हनुमान भक्त राज कहलाए. नवरात्रि साधना वस्तुतः शक्ति संचय की साधना है. संचय शक्ति का सदुपयोग करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है. तप एवं साधना के द्वारा विशिष्ट शक्ति धाराओं आकर्षित किया जाता है. इस अवसर पर अंतरिक्ष से धरती पर विशेष उर्जा का अवतरण होता है. संचय की विशेष आवश्यकता होती है. सायंकालीन सत्र में प्रत्येक संध्या राम नामं की जप की महिमा अनंत है. जो राम नाम का रस पी लेते हैं उसके जीवन के सब दुख मिट जाते हैं. पूर्णाहुति के अवसर पर सभी परिजन, हवन गायत्री मंत्र की आहुति प्रदान की गयी. इस अवसर पर आम प्रकाश गुप्ता द्वारा 105 पौधा एवं फलदार पौधा वितरण किया गया.

शंख प्रक्षालन के लाभ

पाचन तंत्र के शुद्धिकरण एवं विषैले तत्वों से बचाने के लिए यह क्रिया अत्यधिक प्रभावी है।

यह शोधन क्रिया आंतों को सामान्य कार्य करने योग्य बनाती है।

पेट की गैस, कब्ज़ियत, अम्लता, अपच जैसी चीजों से आपको छुटकारा दिलाती है।

माहवारी की पीड़ा, दमा, मुंहासों तथा छालों से मुक्ति दिलाती है।

यह मूत्र संबंधी संक्रमण तथा गुर्दे में पथरी होने से रोकती है।

यदि उपवास या आंशिक उपवास किया जाए तो इस क्रिया के लाभ बढ़ जाते हैं।

फ़ास्ट फूड्स, सुस्त जीवनशैली अथवा अंगों के ठीक से काम नहीं करने के कारण आंतों की प्राकृतिक सफाई नहीं हो पाती है। इस स्थिति में यह आंतों की गड़बड़ी दूर करती है।

आंतों में गंदगी जमने और उसको सही तरीके से साफ करने के लिए यह अत्यंत लाभकारी योगाभ्यास है।

शंखप्रक्षालन क्रिया से मस्तिष्क की काम करने की ताकत बढ़ जाती है और आदमी में तरो ताजगी आ जाती है।

माह अप्रैल में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- डॉ0 आनंद धींगरा (इंदौर) चिकित्सक - रुद्राभिषेक, प्राकृतिक चिकित्सा, नवरात्रि अनुष्ठान एवं यज्ञ में भाग लिया

- श्रीमती रुचिता धींगरा (इंदौर) योग शिक्षिका- रुद्राभिषेक, प्राकृतिक चिकित्सा, नवरात्रि अनुष्ठान एवं यज्ञ में भाग लिया

- डॉ0 मोनिका (जम्मू) चिकित्सक - रुद्राभिषेक, प्राकृतिक चिकित्सा, नवरात्रि अनुष्ठान एवं यज्ञ में भाग लिया

- श्री निखिल चंद्र (सहरसा) सिविल जज - प्राकृतिक चिकित्सा

आगामी कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

भाव पथ

अपने भक्तों को हँसाते हैं भगवान, भले थोड़ा रूलाते हैं भगवान
उन्हें मजबूत बनाते हैं भगवान, भले परीक्षाएँ कठिन लेते हैं भगवान ।।
भक्तों के मनों में बसते हैं भगवान, उन्हें धैर्य, संयम देते हैं भगवान
परिस्थिति अनुकूल हो या हो विपरीत, परछाई बनकर साथ रहते हैं भगवान ।।
गुरु बनकर जीवन में आते हैं भगवान, कितनी कृपा बरसाते हैं भगवान
हम अकिंचन से क्या लेते हैं भगवान, बस श्रद्धा और विश्वास देखते हैं भगवान ।।
कितने प्यारे होते हैं भगवान, भक्तों के रोमों और साँसों में बसते हैं भगवान
कितनी लीलाएँ रचते हैं भगवान, उनका जीवन ही सजा देते हैं भगवान ।।
विज्ञान के भी परम श्रोत हैं भगवान, अध्यात्म की संजीवनी बूटी हैं भगवान
दोनों का संतुलन हो अगर जीवन में तो कब नहीं दिशा दिखाते हैं भगवान ।।
हम सभी जीवात्माओं के हर जन्म में, एकमात्र प्यारे सखा होते हैं भगवान
जो अर्जुन हम बन जाएँ सब इन्सान तो कृष्ण बनकर संग-संग चलते हैं भगवान ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA** **https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39** **https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en** **https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6** **https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en** **https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/**